समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

वर्ष–2021

YEAR-2021

मासिक समाचार–पत्र

संस्करण–त्रयोदश माह–जून

Edition -XIII Month- JUNE

कौन है माफिया?

माफिया शब्द का उच्चारण करते ही हमारे समक्ष एक अपराधिक संगठन का दृश्य उपस्थित हो जाता है। तो क्या प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के समाचारों में हर जगह उपस्थित, यह शब्द **(माफिया)** विश्व के संचालन का केंद्र मान लेना चाहिए? आइए जरा हम **माफिया** शब्द को समझने का प्रयास करते हैं। भू–**माफिया** ,खनन **माफिया**, रेत **माफिया**, ड्रग **माफिया,** चिकित्सा **माफिया** इतने रूपों में तो **माफिया** को आमतौर पर सुना और देखा जाता है। मोबाइल के आ जाने के बाद इंटरनेट की उपस्थिति के साथ विश्व को मानो मुट्ठी में पकड लिया हो। एक मोबाइल में 100रू० का सिम डाल कर टेलिफोन डायरेक्टरी के माध्यम से धनाढ्य संस्थाओं और व्यक्तियों का नंबर प्राप्त कर उन्हें धमकी दी जा सकती है। धन वसूली के लिए बस इस्तेमाल करना होता है एक शब्द **माफिया**। आखिर क्या है यह **माफिया**? मनोरंजन की दुनिया हॉलीवुड और बॉलीवुड शुरू से **माफिया** के प्रभाव से ग्रसित रहे हैं। एक इलाके के एक क्षेत्र के सभी छोटे बडे गुंडों और मुजरिमों को क्षेत्र के राजनेता के आसपास पाया जा सकता है। पुलिस ,सीबीआई, इंटरपोल ,इंटेलिजेंस आदि सभी संस्थाओं की मौजूदगी के बावजूद ये अपराध और अपराध की दुनिया समाप्त क्यों नहीं होती? समाप्त होना तो दूर इन के वर्चस्व को कम करने में भी सभी विफल नजर आते हैं। सभी अपराधों के केंद्र में धन प्रमुख होता है। नक्सलवाद हो या आतंकवाद तस्करी हो या अपहरण सबको आयोजित करता है **माफिया**, क्योंकि विश्व में सबसे धनी है **माफिया**। धन के बिना किसी अपराध और अपराधी को संरक्षित नहीं किया जा सकता ।हमारे आसपास के वातावरण में होने वाला प्रत्येक छोटा अपराध या छोटी घटना किसी बहुत बडे अपराध को छुपाने का जरिया होता है जैसे यदि 1,2 डिब्बा 200–400 या सौ कोई प्रतिबंधित वस्तु पकडी जाए तो यह जान लेना चाहिए कि टनों प्रतिबंधित वस्तुओं को छुपा लिया गया। सरकारी संस्थाएं1,2 डिब्बों की जांच पडताल करती रहे और हजारों की संख्या में प्रतिबंधित वस्तुएं एक स्थान से दूसरे स्थान पहुंचती रहे। कोरोना काल में तो ऐसी घटना है प्रतिदिन देखी जा सकती है कभी ऑक्सीजन की कालाबाजारी तो कभी दवाओं की। बरामदगी की संख्या एक दो , दस, बीस, तक रहती है और वास्तविकता इससे कोसो दूर । कहने का तात्पर्य यह है कि अपराध और अपराधियों का प्रथम संरक्षण कर्ता पक्ष या विपक्ष का कोई राजनेता होता है।जो अपने प्रभाव के द्वारा उन्हें संरक्षण भी प्रदान करता है और मनचाहा अपराध करने और करवाने का मार्ग भी प्रदान करता है, तो क्या राजनेता ही **माफिया** है? देखते हैं– राजनेता कभी तो चुनाव के लिए तो कभी अपनी पार्टी को संगठित करने के लिए सदैव धन की तलाश में रहता है जिसे राजनीतिक भाषा में डोनेशन कहते हैं अर्थात अनुदान या दान। तो उसके **माफिया** होने में संदेह दिखाई देता है। धन का सर्वोत्तम तथा समक्ष स्रोत **माफिया** ही हो सकता है क्योकि सबसे ज्यादा धन तो **माफिया** के पास ही होता है। चुनावों का आयोजन और उसमें होने वाला व्यय जो निर्धारित करता है कि कौन जीतेगा और कौन हारेगा, **माफिया** के इशारे पर ही होता है। अर्थात नेता और राजनेता **माफिया** के मोहरे होते हैं जिन्हें अपने मन मुताबिक चालो के रूप में चला जाता है। अब तस्वीर कुछ साफ होती नजर आ रही है अपराधी **माफिया** नहीं , राजनीतिज्ञ भी **माफिया** नहीं तो **माफिया** क्या है, शायद धन? धन है विश्व के उन पूंजी पतियों के पास जिन्हें विश्व के धनाढ्य व्यक्तियों में 1,2,3,4,5 के रूप में जाना जाता है। अब यह स्पष्ट होता जा रहा है **माफिया** क्या है और क्यों है, विश्व का संचालन कौन करता है और क्यों करता है? यहां **माफिया** के नामों में एक सर्वोच्च नाम का उच्चारण करना भी आवश्यक है जिसे कहा जाएगा धन **माफिया**। इसकी एक बहुत बडी वजह है मनुष्य की मानसिकता जो आज के युग में पूर्णत रूप से अर्थवादी हो चुकी है अर्थ के अतिरिक्त और कुछ भी सोचना नहीं चाहता है आज का मानव समाज ना मानवता ,ना भावना ,ना उच्चादर्श सिर्फ पैसा, पैसा, पैसा यही है **माफिया** के जन्म का कारण और वर्चस्व का भी शायद? यह प्रश्न अभी भी विचारणीय है कि **माफिया** कौन है मात्र एक अपराधिक संगठन या कुछ और? यहां हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं "(कौन है **माफिया**?) इस संबंध में अपने विचारों से हमें अवगत कराएं जिससे किसी सही निष्कर्ष पर पहुचा जा सके।

संपादक
तरुण सिंह

स्वामी, ,मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)

प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह

सह–संपादक
अभय प्रताप सिंह,संस्कृति सिंह

सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह

विशेष संवाददाता
तनुज कुमार

गुजरात को कलंकित करता वेश्याओं का गढ़: वाडिया गाँव

गुजरात की राजधानी गांधीनगर से लगभग ढाई सौ किलोमीटर की दूरी पर बनासकांठा जिले का वाडिया गाँव यौन–कर्मियों के गाँव के रूप में कुख्यात है। अपने अस्तित्व काल से ही वहाँ दो प्रकार की महिलाएँ रहती आ रही हैं–एक प्रकार की वे महिलाएँ हैं जिन्हें उनके ही परिवार के पुरुषों ने अपने जाल में फँसाकर बन्धक बनाए रखा है जबकि दूसरे प्रकार की वे महिलाएँ हैं जो अब उम्र दराज हो चुकी हैं और नाना प्रकार के यौन–रोगों की चपेट में आकर अपने–अपने घरों में ही कैद होकर रह गई हैं। ये बीमारियाँ उन्हें तब लगी थीं जबकि वे सेक्स–वर्कर की जिन्दगी जी रही थीं और अब जीवनभर उन्हीं के साथ रहना उनकी विवशता भी है। इस गाँव में जहाँ लडका पैदा होने पर मातम मनाया जाता रहा है वहीं लडकी के पैदा होने पर खुशियाँ मनाई जाती रही हैं। जन्म के कुछ समय तक लडकी का लालन–पालन करने के पश्चात् उसे वेश्यावृत्ति के घिनौने धंधे में धकेल दिया जाता है। यहाँ की कुल आबादी लगभग 600 है, जिसमें लगभग 360 महिलाएँ हैं। ये सभी महिलाएँ सेक्स–वर्कर हैं। वहाँ जो बच्चे हैं उनको अपने पिता का नाम नहीं मालूम क्योंकि सब–के–सब अवैध हैं।आपको यह जानकर बेहद आश्चर्य होगा कि इस गाँव में एक 15 वर्षीय युवती ऐसी भी है जो 2 बच्चों की माँ है। गुजरात का कोठा नाम से जाने जाने वाले इस गाँव ने विगत 6–7 दशकों में विकास के नाम पर कुछ भी तो नहीं देखा है।
ऐसा भी नहीं है कि इस गाँव के बारे में किसी को कोई जानकारी न हो किन्तु 21 वीं शताब्दी में भी भारतवर्ष की नन्हीं–नन्हीं बालिकाओं को वेश्यावृत्ति के गन्दे धन्दे में धकेल देना, कैशोर्यावस्था में ही उनका माँ बन जाना और प्रौढ़ावस्था आते–आते तमाम यौन–रोगों से ग्रसित होकर घुट–घुटकर जिन्दगी जीने को विवश हो जाना क्या सभ्य समाज के मुँह पर करारा तमाचा नहीं है?
धिक्कार है ऐसी सामाजिक व्यवस्था को, धिक्कार है ऐसे सरकारी–तन्त्र को जो यहाँ की बालिकाओं और महिलाओं को 21 वीं सदी में भी जबरन देह–व्यापार जैसे घृणित कार्य के लिए बन्धक बनाकर रखने वाले इस गाँव को झेल रहा है। क्यों नहीं मुक्त कराया जाता इन अबलाओं को?
गुजरात भारतवर्ष का वह प्रदेश है, जहाँ के लोगों को बहुत ही ईमानदार, शालीन और सभ्य होने के साथ–साथ धार्मिक भी माना जाता है। उस प्रदेश की राजधानी के निकट इस तरह के गाँव का होना निश्चय ही दुर्भाग्यपूर्ण है।
जिस देश में हर नवरात्र पर घर–घर में देवी–पूजन के साथ–साथ दस वर्ष तक की कन्याओं का भी पूजन किया जाता हो, उस देश में इतनी छोटी–छोटी कन्याओं के साथ वहशियों जैसा बरताव कर उनसे यौन–सम्बन्ध स्थापित करना कहाँ तक उचित है? आखिर इस गाँव के लोग भी कब सभ्य–समाज का हिस्सा बन समाज की मुख्य धारा से जुड़ पाएँगे? यह बेहद गम्भीर और शोचनीय है।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

कृष्ण की नगरी में भी चलते थे कोठे

षोडश कला अवतार भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली और ब्रज–मण्डल की राजधानी मथुरा भी कभी कोठेवालियों से आबाद थी। ये कोठेवालियाँ नाच और गाने का काम करती थीं तथा इनके पास बडे–बड़े रईस घरों के रईसजादे अपने मनोरंजन के लिए वहाँ जाया करते थे। मथुरा का चौक बाजार सराफे के काम का मशहूर गढ रहा है। चौक सर्राफा में सज्जो रंडी के नाम से मशहूर एक तवायफ थी जिसके कोठे से नाच–गान की आवाजें बराबर आती रहती थीं। घुँघरुओं की रुनझुन और मादक गीतों के बोलों पर तबले की थापें अक्सर राहगीरों का रास्ता रोक लिया करती थीं।ये दो बहनें थीं रज्जो और सज्जो। इनका एक ठिकाना आर्य समाज रोड पर भी हुआ करता था। अब विगत लगभग दो दशकों से वहाँ सन्नाटा छाया रहता है।मथुरा जैसी धार्मिक नगरी से तवायफों के ठिकाने तो हट गए लेकिन जिस्मफरोशी का गन्दा खेल यहाँ अपनी जड़ जमाए हुए है। मथुरा नगरी अभी इससे पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो सकी है। इस गन्दे धन्धे में जहाँ कुछ होटल और गेस्ट हाउस संचालक लिप्त हैं वहाँ NH-2 नेशनल हाईवे पर स्थित ढाबों पर संभ्रांत खानदानों के लडघ्के और मनचले पुरुष अपने मनोरंजन के लिए यहाँ मुजरे जैसे कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं और वहाँ रात–रात भर अपनी वासना की पूर्ति करते रहते हैं। यद्यपि यहाँ श्रीकृष्ण जन्म स्थान होने के कारण पुलिस की सख्ती भी काफी रहती है किन्तु कभी–कभी ऐसे केस पकड़ में आ ही जाते हैं जो भगवान की जन्म और लीला–भूमि की छवि को दाग लगा देते हैं।

– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल

How to File Income Tax Return for the Deceased by Legal Heir

Did you know that deceased people can also be taxed? As ironic as it sounds, the income tax returns for a deceased person has to be filed, if he/she has taxable income. His legal heir/representative needs to file the return on his behalf for the income earned till the date of death. The legal heir has to register himself at the income tax website for filing the return on behalf of the deceased. In this article, we will discuss how to file the income tax return for the deceased by a legal heir.

Legal heir, in the eyes of law, is the person who represents the assets of deceased. To register as legal heir, any of the following documents are accepted as legal heir certificates:

1- The legal heir certificate issued by the court of law.
2- The legal heir certificate issued by the Local revenue authorities.
3- The certificate of the surviving family members issued by the local revenue authorities.
4- The registered Will of the deceased person.
5- The family pension certificate issued by the State/Central government. The most common certificate available is the certificate of surviving family members issued by the local revenue authorities (Municipality, nagarpalika). This certificate is usually issued in regional language, so the legal heir is required to translate it into English/Hindi and get it duly notarized.

Any income earned after the date of **death** from the assets inherited from the **deceased** is **taxable** in the hands of the legal heir. Legal heir should include this income inherited from the **deceased** in his own income while filing own income **tax** return.

All income up to the date of **death must** be reported and all credits and deductions to which the decedent is entitled may be claimed.

As a legal heir, you have to file the return on behalf of the deceased for income till the date of death. Calculate the income of the deceased from the start of the year till the date of death, and thereby the tax payable on it in the same manner as if the deceased is alive. If you don't know the exact income, then you should refer Bank Statements, investments and other relevant documents necessary for income tax calculation.

Any income earned after the date of death from the assets inherited from the deceased is taxable in the hands of the legal heir. Legal heir should include this income inherited from the deceased in his own income while filing own income tax return.

The legal heir is responsible for paying taxes liable on the Income tax return of the deceased. However, he is not personally liable for the taxes due. The liability of the legal heir is limited to the extent to which the assets he inherited are capable of meeting the liability.

The legal heir is responsible for the tax payable, and also for the other sum i.e. penalty, fine or interest which the deceased would have been liable had he not died. It means that the penalty proceedings for a default by the deceased can also be initiated against the legal heir. However, his liability would be limited to the extent of the assets inherited from the deceased.

Sunil Aggarwal
Aggarwal Sunil & Associates
Chartered Accountants

झाँकी

कोरोना काल में भी पूरे विश्व ने साथ रहके अपने अपने घरों में ही अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2021 बहुत अच्छे से मनाया और चित्र भी साझा किये।
आइये झांकी के माध्यम से कुछ चित्र देखते हैं।

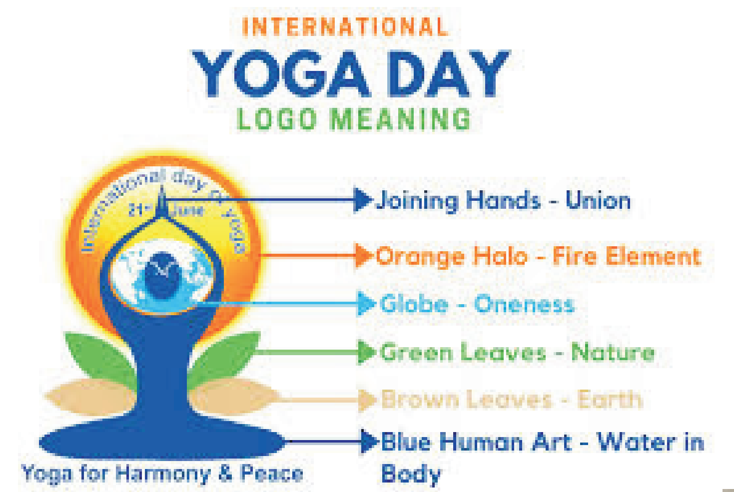

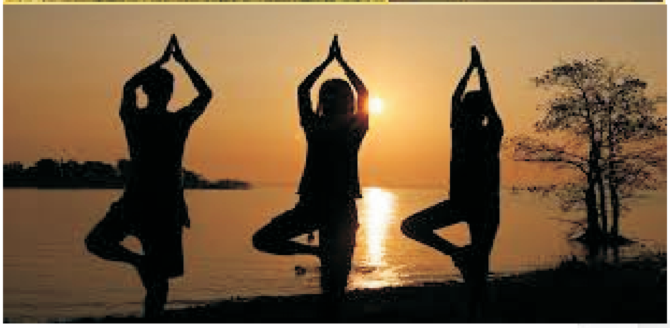

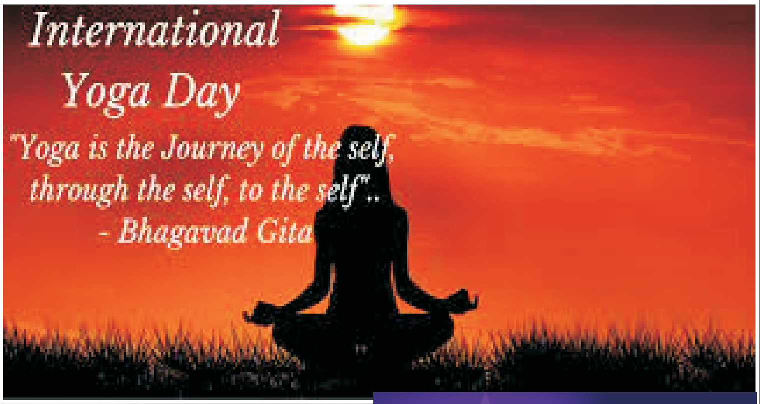

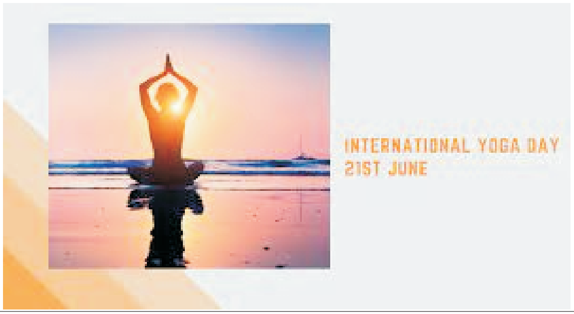

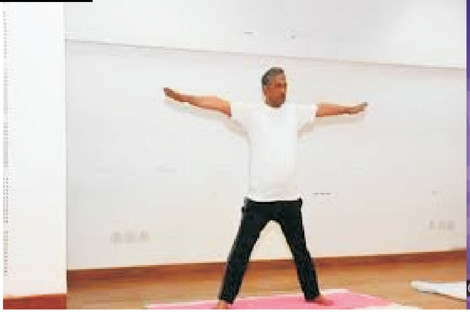

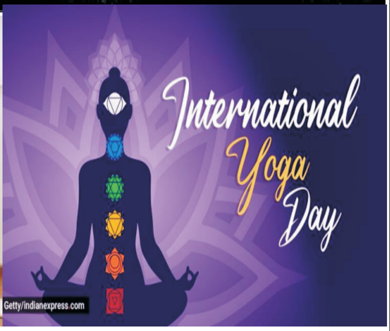

संगीत में रचे–बसे हैं एकीकरण के तत्त्व

संगीत हमें भावनात्मक रूप से जोड़ने का काम करता है। मुझे लगता है कि आज भी संगीत के सेवक और आराधक जाति–धर्म और देश–विदेश जैसी दूरियों से जितना अपने आप को दूर रखे हुए हैं, उतना शायद ही किसी और महकमे के लोग ऐसा कर पाते होंगे। संगीत में सचमुच एकीकरण की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। संगीतज्ञ लोगों का कोई धर्म नहीं होता, कोई जाति नहीं होती, कोई वर्ग–भेद नहीं होता। संगीत के आराधक, संगीत के साधक, संगीत के मनीषी, ये लोग जितने भी हैं, सब केवल और केवल स्वर के आराधक होते हैंय ब्रह्म के सच्चे आराधक होते हैं। इस बात का मुझे भी प्रत्यक्ष एहसास जनवरी 2017 में हुआ। 2017 में मुझे लगातार तीन दिनों तक दिल्ली में जो सुखद एहसास हुआ, उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द भी शायद कम पड जायेंगे। डागर आर्काइव्स की ओर से मेरे पास 20 जनवरी के आसपास एक फोन आया कि विश्व की सूफियाना घराने की प्रथम संतूर वादक डा.वर्षा अग्रवाल, उज्जैन का नई दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में संतूर वादन का कार्यक्रम रखा गया है। यह कार्यक्रम डागर आर्काइव्स द्वारा होने वाली 'गुनिजन' सभा की 19वीं कड़ी के लिए 28 जनवरी को होना है तथा उनके साथ पंडित ललित महंत जी, जो कि उनके गुरु भी हैं और बनारस घराने के विश्वविख्यात् तबला वादक पंडित किशन महाराज के वरिष्ठ शिष्य भी, उनको संगत के लिए आमंत्रित किया गया है। मुझे बताया गया कि मुझे इस गुनिजन सभा में मॉडरेटर का कार्य करना है। मुझे यह भी बताया गया कि मेरे ठहरने का इंतजाम नयी दिल्ली स्टेशन से बाहर निकलते ही बिल्कुल ही नजदीक स्थित श्री स्टार होटल सिंह एम्पायर में किया गया है। इधर मेरे पास इस कार्यक्रम की सूचना आई और उधर मेरी स्वीकृति के थोडे ही देर बाद मेरे रिजर्वेशन के आने–जाने के टिकट भी मेल कर दिए गए। 29 जनवरी की दोपहर को मुझको लौटना भी था दिल्ली से। लेकिन आनलाइन टिकट बुक होकर मेरे पास आ जाने के बाद दिल्ली आकाशवाणी केंद्र से मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित मैडम पाहवा जी का फोन आया कि डॉक्टर साहब ! दिल्ली आकाशवाणी केंद्र अपनी विदेश प्रसारण सेवा के लिए आपका एक साक्षात्कार चाहता है। यह साक्षात्कार 30 मिनट का होगा और इसके लिए आपको 4000/– बतौर मानदेय (कॉन्ट्रैक्ट के मुताबिक) प्रदान किया जाएगा। उन्होंने रिकार्डिंग की तिथि 30 जनवरी 2017 भी तय कर दी। 29 जनवरी को रविवार पड़ने के कारण वह तिथि मुझे मिल नहीं सकती थी, अतः मुझे 30 के लिये ही स्वीकृति देनी पड़ी। खैर !

27 जनवरी की रात्रि 9 बजे मैं स्कूल से क्लास लेकर घर आया और भोजन करने बैठ गया। भोजन के मध्य में ही मेरी पुत्रवधु शिप्रा ने मुझे बताया कि पापा, आपकी आँखों को क्या हो गया ? एक आँख बिल्कुल लाल हो रही है और उस पर सूजन भी है। मैंने कहा कि मुझे बाजार में ऐसा लगा तो था कि किसी मच्छर ने मेरी आँख को हिट किया है। मैंने स्कूटी रोकी भी थी और फिर कुछ रुककर आँख को सहलाकर चल दिया। मैं फटाफट खाना खाकर शहर के मशहूर नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. गोपाल अग्रवाल के हॉस्पिटल इस उम्मीद से गया कि अगर डॉक्टर मरीजों को देख भी चुके होंगे तब भी मुझे तो देख ही लेंगे क्योंकि उनकी पत्नी और बच्चों ने मुझसे संगीत भी सीखा था। मैं गया और आँख दिखाने पर पता चला कि मच्छर अधिक विषैला होने के कारण ही आँख में इतनी सूजन आई है और लाल हो गई है। अभी तुरन्त दवा लो और आँख में भी 3–4 बार थोड़े–थोड़े अन्तर से डालो, कल शाम तक निश्चित सही हो जाओगे।

मैं दवा और आँख का ट्यूब लेकर घर आ गया। जैसे ही मेरी आँख में तकलीफ हुई, मैंने तुरन्त डॉ. वर्षा अग्रवाल को फोन पर सूचना दी और कहा कि कल के प्रोग्राम में शायद मैं न पहुँच सकूँ या पहुँचने के बाद भी मंच पर जाने लायक न रहूँ। डॉ. वर्षा अग्रवाल ने भी मेरी तकलीफ की सूचना प्रोग्राम की ऑर्गनाइजर शबाना डागर जी को दे दी और आकस्मिक स्थिति में किसी अन्य संगीत–शास्त्रज्ञ के इन्तजाम करने का भी आग्रह किया जो इंटरेक्शन का कार्य कर सके।

27 जनवरी की रात्रि तो हो ही गयी थी। 28 की सुबह ही शबाना जी 3 काले चश्मे (गॉगल) लेकर होटल पहुँची और वहाँ पहले से पहुँच चुकीं वर्षा जी को दे दिये, इस उम्मीद के साथ कि सब कुछ ठीक ही होगा लेकिन आप तीनों लोग (वर्षा जी, महन्त जी और रजक जी यानिकि मैं) मंच पर इन्हें पहनकर ही रहें ताकि इंफैक्शन से बच सकें।

ईश्वर की असीम कृपा रही और ऐसी कोई भी नौबत नहीं आई। मैं सुबह तक ही काफी ठीक हो चुका था। दोपहर जब होटल में पहुँचा, सब कुछ सामान्य हो चुका था। शबाना जी की संस्था के एक प्रमुख सहयोगी पहले हमसे मिलने होटल आये और मेरी आँख सही होने की शबाना जी को जानकारी दी। बाद में स्वयं शबाना जी भी आईं और ईश्वर का धन्यवाद जताने लगीं।

शाम को उनके भेजे प्रतिनिधि गाड़ी लेकर आये और हम तीनों कार्यक्रम प्रारम्भ होने के समय से लगभग एक घण्टे पूर्व इण्डिया हैबिटेट सेंटर पहुँच गये। पहले मंचीय व्यवस्था देखी, फिर जलपान किया और देखते ही देखते सम्पूर्ण सभागार गुनिजनों से खचाखच भर गया।

ग्रीन रूम से मंच पर हम तीनों को करतल ध्वनि के मध्य ले जाया गया। मेरा संक्षिप्त परिचय दिया गया और फिर माइक से हम तीनों के स्वागत हेतु शबाना जी को आमन्त्रित किया गया।

मंच पर शबाना जी आईं और उन्होंने मुझ सहित तीनों का तिलक लगाकर व कलावा बाँधकर स्वागत करने से पूर्व आग्रह किया कि मैं हिन्दू रीति–रिवाज के मुताबिक स्वागत के समय स्वस्ति–वाचन और मांगलिक श्लोकों का वाचन अर्थ समझाते हुए करूँ। सचमुच, मेरे लिये यह अनुभव किसी दिवा–स्वप्न की तरह था। आज के इस विषम दौर में, जहाँ चन्द गद्दारों द्वारा हिन्दू और मुस्लिम बन्धुओं को आपस में लड़ाने के लिये नित नये उपाय खोजे जा रहे हैं, वहाँ ऐसे भी लोग हैं, जो हमारी पुरातन गंगा–जमुनी तहजीब को जिन्दा रखने हेतु भरसक प्रयासरत हैं। मैंने भी स्वागत के समय स्वस्ति–वाचन और मांगलिक श्लोकों का न केवल वाचन किया बल्कि संस्कृत के उन श्लोकों का अर्थ भी बताया। उपस्थित जन–समुदाय ने भी भारी करतल–ध्वनि के साथ मेजबान मुस्लिम बहन शबाना जी और हम तीनों हिन्दू मेहमानों को सर–आँखों पर बिठा लिया। मैंने भी मौके का फायदा उठाते हुए श्रोताओं से भगवान् वामन द्वारा राजा बलि से वचन लेकर तीनों लोकों को माप लेने की घटना सुनाते हुए वर्षा जी और महन्त जी की एक–एक अदायगी पर भरपूर तालियों के साथ उनका स्वागत करने का वचन ले लिया।

कैसा सुखद अनुभव था कि एक ओर संगीत की दुनिया में देश के प्रख्यात् डागर घराने के संगीत–सेवियों से सम्मान मिला, दूसरी ओर हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई आदि सभी धर्मों से जुड़े कला–साधकों और रसज्ञ श्रोताओं का प्यार मिला। यही नहीं, हम जिस श्री स्टार होटल में ठहरे थे, वह हमारे सिख बन्धुओं का था। उन्होंने भी हमारे मान–सम्मान में न केवल पलक–पाँवड़े बिछा दिये, बल्कि वे सपरिवार इस कार्यक्रम में भी उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम की सबसे अच्छी बात जो मुझे लगी, वो यह थी कि इसमें न केवल देश के सुदूर अंचलों से आये श्रोतागण देखने को मिले बल्कि कई देशों के संगीतज्ञ महिला–पुरुष भी सन्तूर जैसे भारतीय वाद्य की स्वर–लहरियों में गोता लगाने के लिये उपस्थित हुए। मेरे कनिष्ठ पुत्र आशीष भी अपने कई विदेशी मित्रों के साथ उपस्थित हुए। सभी ने कार्यक्रम की समाप्ति पर कम से कम एक घण्टे तक हम लोगों के साथ खूब फोटो भी खिंचाये और सेल्फियाँ भी लीं। शबाना जी का तो मन ही नहीं हो रहा था हमें छोड़ने का। होटल में आकर भी हम तीनों लोग भोजनोपरान्त रात्रि 3 बजे तक इस अत्यन्त ही सफल कार्यक्रम की मधुरिम स्मृतियों में खोये रहे और संगीत द्वारा कौमी एकता के प्रयासों पर चिन्तन–मनन करते रहे।

दूसरा दिन मेरे लिये बिल्कुल खाली था। मैं करता भी क्या ? हम तीनों लोगों ने पूरे दिन संगीत पर चर्चाएँ कीं और लजीज व्यंजनों का आनन्द लिया। तीसरे दिन प्रातः जल्दी तैयार होकर हमने नाश्ता लिया और मैं टैक्सी लेकर आकाशवाणी भवन जा पहुँचा। मेरा गर्मजोशी के साथ कोई पाँच लोगों ने स्वागत किया और फिर हल्का–सा नाश्ता लिया। बिना किसी तैयारी के मुझे स्टूडियो में ले जाया गया।

मेरे इंटरव्यू के लिये निर्धारित किये गये वरिष्ठ साक्षात्कारकर्ता श्री मुनीश जी से मेरा परिचय कराया गया और उन्होंने तुरन्त ही मेरा इंटरव्यू लेना भी शुरू कर दिया। ठीक 30 मिनट होने से कुछ पहले मुझे समय समाप्त होने का इशारा कर दिया गया। मुनीश जी ने मुझे बताया कि इंटरव्यू बेहद सफल रहा है, बावजूद इसके कि मैं आपके बारे में कुछ भी तो नहीं जानता था, सिवाय इसके कि आप एक प्रख्यात् संगीतज्ञ होने के साथ–साथ चित्रकार, कवि और लेखक हैं।

मुझे याद है कि ऐसी ही स्थिति वर्ष 2015 में दूरदर्शन पर अचानक हुए मेरे साक्षात्कार के समय दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक श्री खजूरिया जी के सामने भी उपस्थित हुई थी। देरी हो जाने के कारण मेरे दूरदर्शन केन्द्र पर पहुँचते के साथ ही मुझे और खजूरिया जी को कैमरे के सामने बिठा दिया गया। 32 मिनट के साक्षात्कार में न कहीं वे रुके और न मैंय और इंटरव्यू के समाप्त होते ही उनके मुख से एकदम निकल पड़ा – एक्सीलेंट सर !

अस्तु! आकाशवाणी पर इंटरव्यू की समाप्ति पर मुनीश जी ही मुझे गेट के बाहर तक विदा करने और होटल के लिये टैक्सी करवाने को मेरे साथ हो लिये। जैसे ही एक टैक्सी वाले को रोका, मेरे मोबाइल की घण्टी घनघना उठी। फोन था राज्य–सभा चौनल से। मुझसे पूछा गया कि मैं इस समय कहाँ हूँ ? जब मैंने कहा कि मैं आकाशवाणी दिल्ली के गेट पर हूँ और होटल सिंह एम्पायर जा रहा हूँ। फोन पर मुझसे होटल न जाकर आकाशवाणी के पास ही स्थित दूरदर्शन चौनल 'राज्य–सभा' के भवन पहुँचने का आग्रह किया गया। बताया गया कि यह पूर्व मुख्य मन्त्री मायावती जी के बँगले के ठीक सामने ही स्थित है।

मैं मुनीश जी से लोकेशन को और अच्छी तरह समझकर 5 मिनट में ही वहाँ पहुँच गया।

वहाँ की एक महिला अधिकारी समीना जी से पता चला कि डॉ. वर्षा अग्रवाल का 'शख्सियत' कार्यक्रम हेतु साक्षात्कार चल रहा है और मुझे भी इसमें वर्षा जी के लिये आशीर्वाद स्वरूप कुछ कहना है।

मैं जब तक कुछ सोचता कैमरे के आगे मुझे बिठा दिया गया। मैंने भी आशीर्वाद स्वरूप दो शब्द बोल दिये।

फिर चाय–नाश्ते के लिये एक कक्ष में मुझे ले जाया गया। समीना जी वहीं मौजूद थीं। उनके सामने पड़े सोफे पर ही मैं भी जा बैठा। वर्षा जी और महन्त जी भी तीसरे पड़े सोफे पर विराजमान हो गये। यह भी एक अजब संयोग ही था कि यहाँ भी हमारी मुलाकात एक मुस्लिम बहन से ही हुई। उनका अति स्नेह और आतिथ्य पाकर मैं बेहद अभिभूत था और बार–बार फिर वही सोचे जा रहा था कि आखिर वह दिन कब आएगा जब सारे देश और दुनिया के हम सब लोग मिल–बैठकर ऐसे ही प्यार से बतियाएंगे और गपियाएँगे। काश, इस देश और दुनिया को एक सूत्र में बाँधने और मन के मैलों को धोने के लिये मैं तृणमात्र भी योगदान कर सका तो अपना 'रजक' (धोबी) नाम सार्थक कर सकूँगा।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक', मथुरा.

49.1% bank deposits are not under Rs. 5 lakh insurance cover: Check if your deposit is protected

When a bank fails, the only respite a **depositor** has is the insurance cover offered by the **DICGC**. This cover was raised to Rs. 5 lakhs from Rs. 1 lakh, effective from Feb 4, 2020.

According to the Reserve Bank of India's latest annual report the number of fully protected accounts in bank stood at 247.8 crores at end March 2021, which is 98.1% of the total number of accounts (252.6 crores). What this means that around 4.8 crore accounts do not enjoy the **deposit insurance** cover offered by **Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation** (DICGC).

Deposit amount coverage much lower than account coverage

As per the annual report released by RBI the total insured deposits stood at Rs. 76,21,258 crore as at end-March 2021. This is only 50.9% of the assessable deposits of Rs. 1,49,67,776 crore. What this means that around 49.1% of the amount deposited with banks do not enjoy the DICGC cover.

While the deposit insurance cover on bank **deposits** has been raised to Rs. 5 lakh, not all deposits are covered. Though this cover is available to all banks, they have to register for this facility and pay the corresponding insurance premium to keep enjoying the financial protection under this deposit insurance.

Banks not being registered with DICGC or not paying premium are the main reasons for deposits not being covered, according to the RBI annual report. However, this can also happen in case of a higher deposit amount held by an account holder in the same right and capacity. For instance, if you hold a total deposit of Rs. 25 lakh in same right and capacity then the maximum cover will remain only Rs. 5 lakh and remaining Rs. 20 lakh deposit will not have this protection.

Failure mainly in co-operative and local area banks

As per the annual report, five cooperative banks and one LAB (or Local Area Bank) were liquidated during the year 2020-21.

As per the un-audited data, the DICGC has processed claims amounting to Rs. 993 crore during 2020-21 with the view to ensuring payment to insured depositors of liquidated banks under the prevailing pandemic situation. Of Rs. 993 crore, the Corporation has settled claims amounting to Rs. 564 crore in respect to nine co-operative banks during 2020-21.

An amount of Rs. 330 crore has been settled in case of one corporative bank in April 2021. However the net outgo of funds towards settlement of claims from the Corporation was also lower as there was a recovery of Rs. 568 crore during 2020-21.

Added to this, there was an amalgamation of a struggling private sector bank Lakshmi Vilas Bank of Singapore (DBS) during 2020-21.

Check if your bank deposit is protected

Deposit insurance provided by the DICGC covers all insured commercial banks, including LAB's, PBs, SFBs, RRBs and co-operative banks. As per the report, the number of registered insured banks stood at 2,058 as on March 31,2021. This includes 139 commercial banks out of which 43 are Regional Rural Banks (RRB's), 2 are Local Area Banks (LABs), 6 are Payment Banks (PBs) and 10 are Small Finance Banks. Apart from this 1,919 co-operative banks are also registered out of which 34 are State Co-operative Banks (StCB's), 347 are District Central Co-operative Banks (DCCBs) and 1,538 are Urban Co-operative Banks (UCBs).

Despite this there are good number of banks mostly co-operative which are not registered with DICGC to offer the insurance cover to their depositors. If you have a deposit in a co-operative bank, you need to check if it is registered for the deposit insurance. You can click here to find out
https://www.dicgc.org.in/FD_ListOfInsuredBanks.html
(This article has not been written by me. This article for originally published in Economic Times by Mr. Naveen Kumar- ET Online May 27, 2021, 06.52 PM IST)

We look forward to your feedback on
naad.anusandhan@gmail.com

Thanks for your time.
Pawas Aggarwal
91 87558 26311

Mrigaaश्री
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

शाश्वत संगीत'

'डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक''

'संगीत शाश्वत है।'
'जो'
'कल भी था,'
'आज भी है'
'और कल भी रहेगा।'

'मन्दिर की घंटियों से निःसृत'
'मधुर–मधुर गुंजार में,'
'घड़ियालों की टंकार में,'
'मस्जिद से टीप लगाते'
'मुल्लों की अजान में,'
'गुरुद्वारे से ग्रन्थियों द्वारा'
'गुरुग्रन्थ साहिब के गान में,'
'बाइबिल की शान में'
'यीशु के गुणगान में,'
'बस संगीत ही तो है।'

'भारत माँ की शान में'
'तिरंगे के गुणगान में,'
'वन्दे मातरम् गान में,'
'जन–गण–मन अभिमान में'
'बस संगीत ही तो है।'

'जिसे सुनने को चाहिए'
'केवल और केवल,'
'एक–दूजे के प्रति मंगल कामना।'
'राष्ट्र–प्रेम और भाईचारे की भावना।।'
'सद्भावना! सद्भावना !! सद्भावना!!!'

नैतिकता

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

जब घोर अनैतिक क्रूर शक्तियाँ,
धर्म– नाश हित तुल जाएँ।
तब पाठ ढ़ाना नैतिकता का,
उचित नहीं, अनुचित होता।।
तब एकमात्र कर्त्तव्य मात दे
सकते कैसे दुश्मन को।
जिससे हिल जाएँ चूलें उसकी,
लक्ष्य वही हितकर होता।।
बर्दाश्त से बाहर होने पर भी,
जुल्म जो हैं सहते जाते।
थप्पड़ इक गाल पे खाकर भी
जो दूजे को करते जाते।।
फिर बिना मिटाए मिट जाते वे,
भीरु सभी निश्चित जानो।
ऐसे कापुरुष, क्लीव, जनखों का
'रजक' धर्म फिर मिट जाता।।

तजुर्बा

तजुर्बे के मुताबिक खुद को ढाल लेता हूं!
कोई प्यार जताए तो जेब संभाल लेता हूं!!
वक्त था सांप की परछाई डरा देती थी!
अब एक आध मै आस्तीन में पाल लेता हूं!!
मुझे फासने की कहीं साजिश तो नहीं!
हर मुस्कान ठीक से जांच पडताल लेता हूं!!
बहुत जला चुका उंगलियां मैं पराई आग में!
अब कोई झगडे में बुलाए तो मै टाल देता हूं!!
सहेज के रखा था दिल जब शीशे का था!
पत्थर का हो चुका अब मजे से उछाल लेता हूं !!

कलम से
सी एल गुप्ता
एडवोकेट
एल एल बी, एल एल एम

'महिमा मात–पिता–गुरु की'

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

मात–पिता–गुरु बिनु नहीं,
जीवन नैंकु सुहात।
घड़ी–घड़ी–पल–छिन इन्हें,
याद करत न अघात।।
याद करत न अघात,
ज्ञान जो इन सों पाया।
दिया न कोई अन्य,
सभी ने बस भरमाया।।
'रजक' तीन लोकों में
इनकी महिमा न्यारी।
जान सके नहिं इनको,
हत–भागी बड़ भारी।।

फेसबुक

फोटुओं के डालने से कुछ न होगा।
फेसबुक का फेस नहिं देगा सहारा।।
काम कर कुछ छोड़कर सारे दिखावे।
प्रकृति को देकर सहारा बन सहारा।

विश्व पर आवरण है जब वायरस का।
प्रकृति से कब तक करेगा तू किनारा।।
समझ ना पाया अगर पर्यावरण को।
मरण निश्चय है श्रजकश् फिर तो तुम्हारा।।

समृद्ध भारत वसुंधरा

Mucormycosis: Why are Covid-19 patients being affected by black fungus infection?

With the world reeling under the throes of a submicroscopic, enigmatically animated infectious particle, the novel coronavirus, we now have to contend with another hitherto not so common opportunistic foe the so-called 'Black fungus' infection, academically christened mucormycosis," said Dr Dhananjaya I Bhat, senior consultant, neurosurgery, Aster RV Hospital.

He added, "The most brutal, ruthless manifestation being Rhino-orbito-cerebral mucormycosis (ROCM). Keeping this in mind we will revisit this lesser-known organism; the fungus and its relevance in the present turbulent uncertain times."

What is ROCM or Black fungus infection?

Mucormycosis (previously known as Zygomycosis) is a serious but rare fungal infection caused by a group of molds known as micromycetes. Rhino-orbital-cerebral-mucormycosis (ROCM) is caused by molds of the order Mucorales. In this, there are a few subgroups like Rhizopus, Mucor, Rhizomucor which are most commonly involved in this infection. These fungi are angioinvasive i.e, they invade the surrounding blood vessels and destroy them resulting in tissue necrosis and death. These molds live throughout the environment and their spores are present in the air. They get lodged in the nasal cavity and adjoining sinuses.

On reaching a favourable milieu they ensconce themselves within the tissue. The spores germinate, hyphae (filamentous processes) outgrow and release destructive juices which digest the host tissue and provide nutrition to the rapidly growing fungi. As they grow in the nasal cavity they relentlessly destroy the surrounding host tissue. The bones in the nasal cavity and sinuses are destroyed. These include the hard palate, the orbital bones, and the skull base bones. Black masses may be seen in the nasal cavity and oral cavity. If it destroys the orbit and enters the eye socket it may cause bulging of the eyes, pain, frozen eye movements, and blindness. Once it enters the cranial cavity by breaching the skull base it blocks major arteries and venous lakes resulting in major life-threatening brain strokes and bleeds, consultant, neurosurgery, Aster RV Hospital.

He added that the spores can sometimes travel into the depths of the respiratory system and get comfortably lodged in the lung parenchyma (alveoli and bronchioles). Here the fungi grow rapidly, destroying the lung tissue and compromising blood oxygenation. From there it can spread into the circulatory system resulting in an existential crisis.

Is it contagious?

The disease is not contagious and doesn't spread from one person to another.

Why is it occurring in COVID 19 patients?

Mucormycosis can occur any time after COVID-19 infection, either during the hospital stay or several days to a couple of weeks after discharge.

"The COVID-19 causes favourable alteration in the internal milieu of the host for the fungus and the medical treatment given, unwittingly also abets fungal growth. COVID-19 damages the airway mucosa and blood vessels. It also causes an increase in the serum iron which is very important for the fungus to grow. Medications like steroids increase blood sugar. Broad-spectrum antibiotics not only wipe out the potentially pathogenic bacteria but also the protective commensals. Antifungals like Voriconazole inhibit Aspergillosis but Mucor remains unscathed and thrives due to lack of competition. Long-term ventilation reduces immunity and there are speculations of the fungus being transmitted by the humidifier water being given along with oxygen. All the above make for a perfect recipe for mucormycosis infection," he explained.

What are the clinical features of mucormycosis infection? How do we diagnose them?

Nasal blockage, bleeding, discharge from the nose are initial features of mucormycosis. On endoscopic visualization of the nasal cavity an unmistakable black eschar (slough or dead tissue) coated masses will be present which gives away the diagnosis. As the disease progresses the palate may be destroyed as a large black explained Dr Dhananjaya I Bhat, senior necrotic mass may be seen on opening the mouth. When the orbit is involved there will be proptosis (protrusion of eyeball), loss of movements of the eyeball with consequent double vision. Eye pain, redness with blindness can follow. If the brain is invaded due to blood vessel blockage there will be strokes, hemorrhages, and even death. Patients can also have headaches, drowsiness, limb weakness, seizures and even death.

Based on clinical suspicion MRI and CT scan of the nasal cavity, sinuses, and brain is performed. These give a clear picture of the presence of the lesion along with its extent.

In lung mucormycosis clinical features are similar to COVID-19 with fever, cough, shortness of breath, making clinical diagnosis difficult. Suspicion of fungal infection must be considered when a patient despite getting appropriate medications is not improving or was improving and has unexplained deterioration. CT chest helps in diagnosis by revealing additional lung lesions. Diagnosis is by microscopic evaluation of the bronchopulmonary lavage aspirate

Can there be other fungal infections in COVID 19 patients?

In western countries, Mucor has not caused as much havoc as it has in India. However, there has been an increased incidence of other fungal infections like aspergillosis and candidiasis in COVID-19 patients. Clinically lung infections by a fungus are difficult to diagnose. The patient has fever, cough and breathlessness, not unlike what COVID causes. Therefore overlap causes diagnostic quandaries. The clinician should be alert and aware of possibilities of fungal infection and should have a low threshold for suspicion, especially when a COVID-19 patient is improving and suddenly starts having a respiratory decline. Bronchopulmonary lavage and pathological examination for fungi are must in order to incorporate appropriate treatment.

How is ROCM treated?

It is a multi-pronged approach. Time is of the essence here. Once a clinical and radiological diagnosis is made, endoscopic evaluation of the nasal cavity can confirm a fungal lesion. Immediate surgical debulking is a must. The surgery can be radical and disfiguring but is acceptable considering the existential crisis of leaving behind any residual tissue. The entire nasal cavity needs to be scoured and all fungal, necrotic tissue needs to be removed. If the orbit is involved surgeries as drastic as exenteration of the eye socket contents may be required. Intracranial decompression may be required if the infection has spread to the brain. Surgical intervention should be undertaken a couple of hours after diagnosis.

In tandem, medical management with antifungal drugs, namely injection Liposomal amphotericin-B needs to be instituted. Older form amphotericin deoxycholate is significantly nephrotoxic. However, the liposomal cousin is safe and effective. Posaconazole tablets/ suspension and intravenous forms are available and are used in lieu of amphotericin if the latter is not tolerated by the patient. Following several weeks of intravenous medication depending on the response the patient is put on oral posaconazole sustained release tablets for several months. Isavuconazole is also an alternative drug that can be used. Drugs are stopped after clinical and radiological clearance of the disease.

During treatment, judicious use of steroids (keeping blood sugar levels under control), antibiotics, and other antifungal drugs need to be done.

Are these infections life-threatening?

These infections are very lethal, and if not treated most will not make it. The mortality ranges between 25 to 90%. Once the infection spreads into the brain mortality is very high. Hence a lot of importance is given to early diagnosis and prompt institution of treatment.

How to prevent the occurrence of ROCM?

Prevention is always better than cure.

In hospital:

*Maintenance of good hygiene and cleanliness is a must. Regular oral hygiene care with mouthwash, povidone-iodine gargles must be done.

*While administering oxygen, water for humidification must be sterile and there should be no leakage from the humidifier.

*Steroid usage must be limited to no more than necessary with strict blood glucose control.

*Unnecessary use of broad-spectrum antibiotics, antifungals should not do as this removes the normal commensal flora resulting in the growth of unwanted organisms due to lack of competition.

Once discharged:

*Stay indoors as much as possible

*Regular exercises

*Control of blood sugars

*At home, the surroundings must be clean and free from dust and dampness

*Maintain oral and nasal hygiene

*While going out always wear an N-95 mask

*Avoid construction areas, fields, grounds.

*Soil and plants are the areas that abound with fungi. Hence better to avoid working with soil, gardening. If unavoidable, masks, rubber gloves, and boots are a must.

"Post-Covid, during recovery, if a patient develops sinus headache, facial pain, stuffy nose, bloody nasal discharge, blackish discoloration over nose or palate, eye pain, swelling, diminished of vision or double vision, tooth pain, headache, seizures, drowsiness, limb weakness then immediate medical help must be attained.

"The key take-home messages are opportunistic fungal infections are occurring in COVID-19 patients, awareness among health care providers and the public is important, early diagnosis and aggressive treatment are paramount for improving outcomes in an otherwise dismal disease, together we can definitely win this battle against COVID 19 and mucormycosis," the doctor said.